कोशिश न करने के बजाए कोशिश करें शायद आप कामयाब हो जाए।
– अज्ञात

## भारतीय राजनीति का मुहावरा

**एक बात साफ हो गई कि भारतीय राजनीति को लेकर कोई फ०र्म्यूला अभी स्थिर नहीं किया जा सकता। आजादी के सात दशक बाद भी यह प्रयोगों से ही गुजर रही है। इस सदी की शुरुआत में ही दो गठबंधन एनडीए और यूपीए सामने आए।**

राधा जोशी

पिछले दो दिनों में दो राज्यों के गठबंधन प्रयोगों ने भारतीय राजनीति का मुहावरा बदल दिया है। रविवार को साल में दूसरी बार तमाम विपक्षी नेताओं के जमावड़े के बीच झारखंड में हेमंत सोरेन के नेतृत्व में बीजेपी विरोधी गठबंधन ने शपथ ली, जबकि सोमवार को महाराष्ट्र की गठबंधन सरकार ने 36 मंत्रियों के शपथ ग्रहण के साथ अपने मंत्रिमंडल को व्यवस्थित रूप दिया। इसमें चौंकाने वाली बात रही अजित पवार का डिप्टी सीएम बनना, जिन्हें कुछ समय पहले इसी पद के लिए बीजेपी की प्रस्तावित सरकार में भी शपथ लेते देखा गया था। थोड़ा और पीछे चलें तो कर्नाटक में और उससे पहले बिहार में जो सियासी उलटफेर दिखा, उससे एक बात साफ हो गई कि भारतीय राजनीति को लेकर कोई फॉर्म्यूला अभी स्थिर नहीं किया जा सकता। आजादी के सात दशक बाद भी यह प्रयोगों से ही गुजर रही है।

कांग्रेस सिस्टम वाले शुरुआती दौर को छोड़ दें तो नब्बे के आसपास इसमें एक बड़ा मोड़ आया, जब वीपी सिंह ने केंद्र में दक्षिण, वाम और क्षेत्रीय, तीनों पंथों को साधकर गठबंधन की अवधारणा पेश की। उस समय कहा गया कि इटली की तर्ज पर अब भारत में बहुत सारी ताकतों के गठजोड़ शासन करेंगे और उन्हें जोड़ने वाला तत्व विचार नहीं, सत्ता का गणित होगा। लेकिन वह थिअरी बनते ही बिगड़ गई। इस सदी की शुरुआत में ही दो गठबंधन एनडीए और यूपीए सामने आए, जिनमें एक की धुरी बीजेपी और दूसरे की कांग्रेस थी। इसका सिद्धांत कुछ यूं बांधा गया कि अमेरिका–ब्रिटेन की तरह दो वैचारिक खेमों की सियासत भारत में भी चलेगी, लेकिन क्षेत्रीय ताकतों से समायोजन बनाकर। फिर बीजेपी ने यूपीए सरकार के कमजोर फैसलों का हवाला देते हुए मजबूत केंद्रीय सत्ता के नाम पर वोट मांगे और उसे जबरदस्त जन समर्थन प्राप्त हुआ।

2014 से शुरू होकर यह धारणा अब जोर पकड़ने लगी है कि आजादी के शुरुआती 20–25 वर्षों जैसी ही एकदलीय वर्चस्व वाली व्यवस्था एक बार फिर कायम हो गई है, जिसे हिंदुत्व सिस्टम जैसा कोई नाम दिया जा सकता है। बहुसंख्यक आग्रहों वाली इस सत्ता की आक्रामक राष्ट्रवादी विचारधारा गांव–कस्बों के चुनावों को भी 'मोदी बनाम कौन' का रूप दे देती है। लेकिन इस तस्वीर का दूसरा पहलू यह है कि पिछले एक–डेढ़ वर्षों में ही कुल पांच राज्य बीजेपी के हाथ से जा चुके हैं। इसके साथ ही गठबंधनों का भुरभुरापन भी उजागर होने लगा है। कर्नाटक में जेडीयू–कांग्रेस की सरकार गिराने के लिए बीजेपी ने विधायकों के इस्तीफे वाला फॉर्म्युला ढूंढा।

बिहार में बीजेपी के खिलाफ चुनाव लड़ने वाले नीतीश कुमार ने पलटकर उसी के साथ सरकार बना ली तो महाराष्ट्र में बीजेपी से मिलकर चुनाव लड़ने वाली शिवसेना ने कांग्रेस–एनसीपी के साथ सरकार बनाने का फैसला किया। शक्तिशाली केंद्र सरकार द्वारा लाए गए नागरिकता कानून के विरोध में राष्ट्रव्यापी आंदोलन देखने को मिल रहा है। गौर से देखें तो सदी के दूसरे दशक का यह आखिरी दिन किसी स्लूइस गेट जैसा है, जिसके एक तरफ पानी स्थिर है लेकिन दूसरी ओर प्रचंड उथल–पुथल दिखाई पड़ रही है।

## गुणों के प्रभाव

धर्म-दर्शन

**सुंदरचंद ठाकुर।** अब सवाल यह है कि क्या व्यक्ति में जो गुण आ गए, वे हमेशा बने रहेंगे या उसके पास इसका भी कोई जरिया होता है कि वह एक तरह के गुणों के प्रभाव से मुक्त होकर दूसरे गुणों के प्रभाव में गति कर जाए। यानी जो तमस से ज्यादा भरा है, वह रजस से ज्यादा भर जाए और रजस वाला सत्व की ओर चला जाए। असल में हर व्यक्ति को प्रकृति ने खुद को समझने की और समझकर सुधारने की पूरी शक्ति दी हुई है। ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं। हमने डाकुओं को साधु बनते देखा है। हत्यारे भी सदाचारी बन चुके हैं। सवाल यह है कि हम रजस और तमस को कैसे साधते हैं। तमस के कई ऐसे गुण हैं, जो जरा–सा साधने पर रजस में बदल जाते हैं। क्रोध उन्हीं में से एक है। क्रोध आना एक बात है। तमस से भरे व्यक्ति में यह सहज भी है। लेकिन तमस वाला व्यक्ति इस क्रोध में किसी का खून कर सकता है, दूसरों को और इस तरह खुद को भी नुकसान पहुंचा सकता है।

## संपादकीय

### नौकरशाही को नया रूप

केंद्र सरकार ने अपने विभिन्न मंत्रालयों में 9 प्रफेशनल्स को संयुक्त सचिव के रूप में नियुक्त किया है। इनमें से ज्यादातर प्राइवेट सेक्टर से हैं। नौकरशाही को नया रूप देने के मकसद से पिछले साल सरकार ने लैटरल एंट्री के जरिए लोगों को उच्च प्रशासनिक सेवा में मौका देने का निर्णय किया था। इसका मतलब अपने–अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ बिना यूपीएससी की परीक्षा दिए भी जॉइंट सेक्रटरी जैसे पदों पर नियुक्त हो सकते हैं।

पिछले साल जून में इसके लिए आवेदन मंगाए गए थे जिसका परिणाम आ गया है। इस तरह लैटरल एंट्री के जरिए नियुक्त हुए अधिकारियों की पहली खेप अपनी जवाबदेही संभाल रही है। नौकरशाही में बदलाव की जरूरत अरसे से महसूस की जा रही है।

कई लोगों का आरोप रहा है कि सिविल सेवा की परीक्षा का ढांचा ही ऐसा हो गया है जिसमें रट्टू तोते या किताबी कीड़े ज्यादा सफल हो रहे हैं और उनका आमतौर पर समाज के यथार्थ से कोई लेना–देना नहीं होता है। फिर सामाजिक–आर्थिक स्थितियां भी इतनी बदल गई हैं कि अब विकास कार्य के लिए कई तरह के विशेषज्ञों की जरूरत है। इन्फोसिस के संस्थापक एन. आर. नारायणमूर्ति ने तो यहां तक कहा था कि आईएएस को समाप्त कर उसकी जगह इंडियन मैनेजमेंट सर्विस का गठन किया जाना चाहिए जिसमें अलग–अलग क्षेत्रों के विशेषज्ञों को रखा जाए। कुछ लोगों का मानना था कि इस ढांचे को पूरी तरह खत्म करने के बजाय इसे लचीला बनाया जाए, इसलिए 2005 में पहले प्रशासनिक सुधार आयोग की रिपोर्ट में नौकरशाही में लैटरल एंट्री का प्रस्ताव पहली बार आया। वैसे यह कोई एकदम नई बात नहीं है। पहले भी सरकार में उच्च स्तर पर सिविल सेवा से बाहर के लोगों को रखा जाता रहा है।

**सबसे पहले 2007 में इस वेबसाइट ने दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींचा जब इसने ग्वांतानामो बे में रह रहे अमेरिकी जेल गार्ड्स के लिए बने नियमों का खुलासा किया।**

## ध्यान अपनी ओर खींचा

रमन वर्मा

बहुत दिनों बाद जूलियन असांजे फिर से चर्चा में आए हैं। पिछले दिनों उन्हें लंदन स्थित इक्वाडोर के दूतावास से गिरफ्तार किया गया। विकीलीक्स के संस्थापक जूलियन असांजे ने आज से नौ साल पहले अमेरिका के गोपनीय दस्तावेजों को सार्वजनिक कर दुनिया में सनसनी फैला दी थी। 3 जुलाई 1971 को ऑस्ट्रेलिया में पैदा हुए असांजे कंप्यूटर प्रोग्रामर, पत्रकार और सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

उन्होंने 2006 में 'विकीलीक्स' नामक वेबसाइट की शुरुआत की जिसका मकसद विभिन्न प्रशासनिक–कूटनीतिक–व्यापारिक दस्तावेजों के जरिए दुनिया भर के सत्ता प्रतिष्ठानों की पोल खोलना था। सबसे पहले 2007 में इस वेबसाइट ने दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींचा जब इसने ग्वांतानामो बे में रह रहे अमेरिकी जेल गार्ड्स के लिए बने नियमों का खुलासा किया। 2010 में उसने 2007 का एक विडियो जारी किया जिसमें एक अमेरिकी सैन्य हेलीकॉप्टर को बगदाद की सड़कों पर दो पत्रकारों और कई इराकी नागरिकों पर गोलीबारी करते हुए दिखाया गया था। इसी साल उसने अफगानिस्तान युद्ध से जुड़ी 90,000 से अधिक गोपनीय अमेरिकी सैन्य फाइलें और

इराक से 4,00,000 तथा दुनिया के लगभग हर देश में 2,50,000 अमेरिकी राजनयिकों के समुद्री तार सार्वजनिक कर दिए। इससे अमेरिकी सत्ता बौखला गई और उसने असांजे और विकीलीक्स को तबाह करने का अभियान ही छेड़ दिया। उन्हें पकड़ने और उन पर मुकदमा चलाने के कई बहाने खोजे जाने लगे। उन पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगा जो बाद में हटा लिया गया।

साल 2012 से असांजे लंदन के इक्वाडोर दूतावास में रह रहे थे। उन पर 2016 के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में रूसी हैकर्स की मदद से हिलेरी क्लिंटन और डेमोक्रेटिक पार्टी के कंप्यूटरों से दस्तावेज चोरी करने का आरोप भी लगा। विकीलीक्स के कई खुलासों के तार भारत से भी जुड़े, हालांकि यहां की राजनीति पर उसका बहुत असर नहीं दिखा। अमेरिका और अन्य शक्तिशाली देश आज उनकी जान के पीछे पड़े हैं। समझ में नहीं आता कि किस जुर्म की सजा उन्हें दी जाएगी?

सचाई यह है कि उन्होंने सत्ता के चरित्र को बेनकाब किया है और साबित किया है कि ऊपर से प्रजातंत्र का मुखौटा लगाकर विकसित देशों के राजनेता अपनी ताकत के दम पर दुनिया में मनमानी कर रहे हैं। वे चाहते हैं कि दुनिया के बाकी शासक उन्हीं की मर्जी से चलें। यही नहीं, हर देश में एक कुलीन तबका है जो सत्ता पर काबिज है और अपना हित साधने के लिए अपने ही बनाए कानूनों की धज्जियां उड़ाता रहता है।

शासकों की नजर में असांजे चाहे जो भी हों पर दुनिया भर के तरक्कीपसंद और लोकतंत्र समर्थकों के लिए वह हीरो हैं। साल 2010 में असांजे को टाइम मैगजीन ने 'पर्सन ऑफ द ईयर' के खिताब से नवाजा था। वह सचाई के प्रतीक हैं लेकिन आज उनकी जान खतरे में है। ऑस्ट्रेलिया ने साफ कहा है कि उन्हें फांसी न दी जाए। उनके पक्ष में दुनिया भर के उन तमाम लोगों को सामने आना चाहिए जो सत्य और न्याय के पक्षधर हैं।

### अष्टयोग-4919

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | 7 | | 6 | | 2 | 1 |
| 1 | 31 | 2 | 38 | | 28 | |
| | 1 | 6 | | 7 | 2 | |
| 6 | 36 | | 33 | | 28 | 5 |
| 3 | | 7 | | 2 | 1 | |
| | 32 | | 31 | 4 | 33 | 2 |
| 2 | 3 | | 4 | | 6 | 7 |

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 4918 का हल

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | 3 | 7 | 1 | 6 | 2 | 5 |
| 3 | 32 | 6 | 36 | 2 | 30 | 1 |
| 6 | 1 | 2 | 5 | 7 | 4 | 3 |
| 5 | 33 | 1 | 29 | 4 | 30 | 6 |
| 7 | 6 | 5 | 4 | 1 | 3 | 2 |
| 2 | 30 | 4 | 32 | 3 | 31 | 7 |
| 1 | 2 | 3 | 7 | 5 | 6 | 4 |

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

### दुनिया में बढ़ रही बॉलिवुड की पैठ

**दिनेश श्रीनेत।** चेतन आनंद की 'नीचा नगर' भारत की पहली ऐसी फिल्म थी, जिसे अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली थी। यह आजादी से पहले की बात है। सन् 1946 में इसे कान फिल्म महोत्सव में ग्रैंड प्रिक्स अवार्ड मिला था और दर्शकों तथा आलोचकों ने इसे अपने समय से बहुत आगे की फिल्म माना था। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कुछ ऐसी ही प्रशंसा वी शांताराम की फिल्म 'दो आंखें बारह हाथ' को मिली। सत्यजीत रे ने तो विश्व सिनेमा में भारत को जो मान–सम्मान दिलाया है उसे सारी दुनिया जानती है। हर साल बनाई जाने वाली फिल्मों की संख्या की दृष्टि से भारतीय सिनेमा उद्योग विश्व में पहले नंबर पर है। इसके बाद भी यह माना जाता रहा है कि भारत के सिनेमा ने वैसी कोई पहचान नहीं बनाई जैसी हांगकांग के मार्शल आर्ट सिनेमा ने अपनी अनोखी शैली और जबर्दस्त बिजनेस के जरिए, ईरान के सिनेमा ने अपनी उत्कृष्टता के जरिए या कोरिया के सिनेमा ने विषय के चयन और प्रस्तुतिकरण की वजह से सारी दुनिया में बनाई है।